'तुला' लग्न

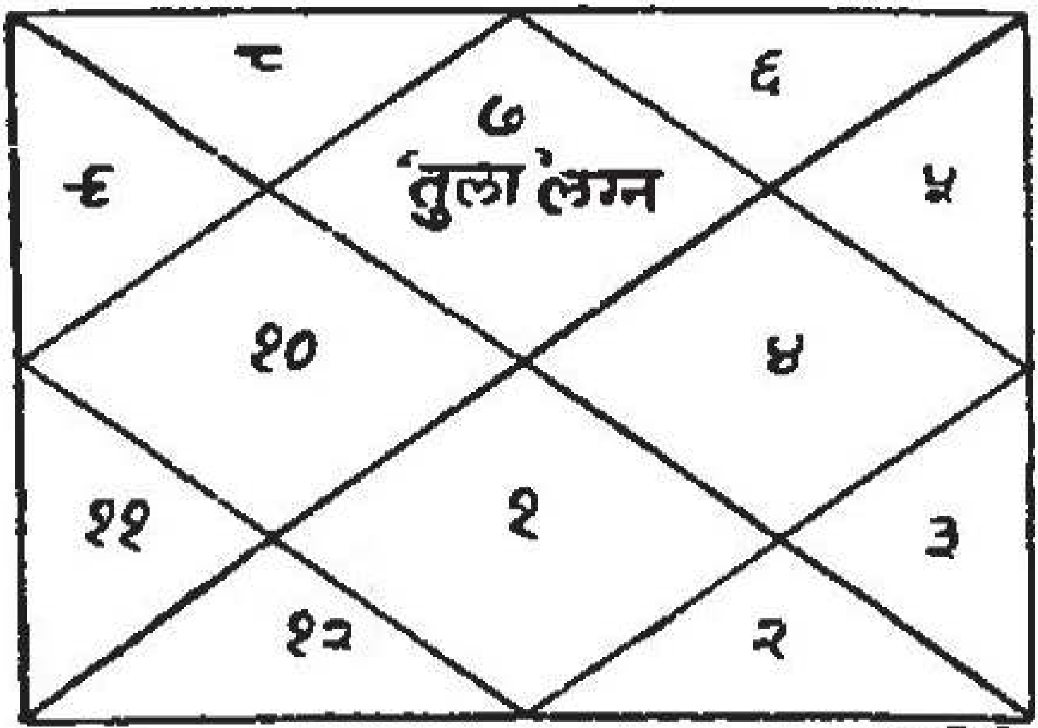

७६९

[‘तुला’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'तुला' लग्न का फलादेश

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, शिथिल शरीर तथा मोटी नाक वाला होता है। वह कफ प्रकृति वाला एवं वीर्यविकारयुक्त भी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, धनी, यशस्वी, परोपकारी, प्रियवादी, सत्यवादी, सतोगुणी, तीर्थ-प्रेमी, निर्लोभ, व्यवसाय-कुशल, ज्योतिषी, भ्रमणशील तथा अपने कुल का भूषण होता है। वह राज्य द्वारा सम्मानित, देव-पूजन में चित्त लगानेवाला तथा पर-स्त्रियों से प्रेम रखने वाला भी होता है।

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आरम्भिक अवस्था में दुःख भोगना पड़ता है, मध्यमावस्था में वह सुख प्राप्त करता है तथा अन्तिमावस्था सामान्य स्थिति में बीतती है।

'तुला' लग्न के जातक का भाग्योदय ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में होता है।

'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली से ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'तुला' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ७८१ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७७०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७७१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७७२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७७३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७७४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७७५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७७६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७७७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७७८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७७९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७८०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७८१

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८२ से ७९३ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७८२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७८३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७८४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७८५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७८६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७८७

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७८८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७८९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७९०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७९१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७९२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७९३

'तुला' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कुण्डली ७९४ से ८०५ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७९४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७९५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७९६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७९७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७९८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७९९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८००
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८०१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८०२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८०३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८०४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८०५

'तुला' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०६ से ८१७ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८०६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८०७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८०८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८०९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८१०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८११
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८१२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८१३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८१४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८१५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८१६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८१७

'तुला' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१८ से ८२९ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८१८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८१९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८२०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८२१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८२२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८२३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८२४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८२५ यस
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८२६
(ञ) 'मकर' राशि-पर हो तो संख्या ८२७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८२८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८२९

'तुला' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३० से ८४१ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८३०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८३१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८३२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८३३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८३४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८३५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८३६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८३७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८३८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८३९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८४०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८४१

'तुला' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४२ से ८५३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८४२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८४३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८४४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८४५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८४६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८४७

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८४८

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८४९

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८५०

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८५१

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८५२

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८५३

'तुला' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५४ से ८६५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८५४

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८५५

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८५६

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८५७

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८५८

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८५९

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८६०

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८६१

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८६२

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८६३

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८६४

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८६५

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६६ से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८६६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८६७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८६८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८६९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८७०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८७१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८७२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८७३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८७४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८७५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८७६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८७७

'तुला' लग्न में 'सूर्य'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : सूर्य

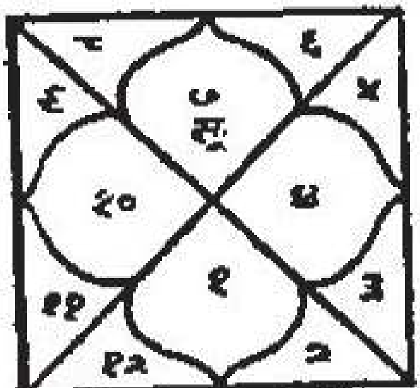

८००

शरीर-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को शरीर में सदा दुर्बलता तथा सौन्दर्य की कमी का अनुभव होता है। वह किसी की गुलामी करने में हानि समझता है। पराक्रम की भी कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र मंगल की राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष से लाभ होता है। सुन्दर स्त्री मिलती है। भोग-शक्ति तथा व्यवसाय पक्ष की उन्नति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

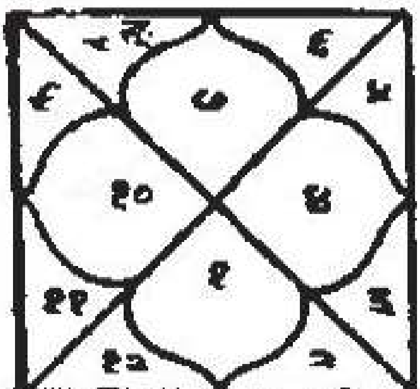

८०१

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है और वह धनी तथा प्रभावशाली भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व तथा आयु के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

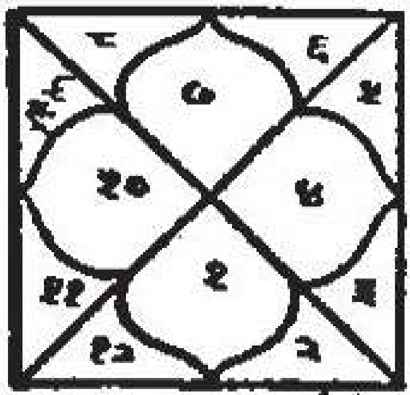

७६२

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने बाहु-बल का भरोसा अधिक रखता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होती है तथा आमदनी अच्छी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

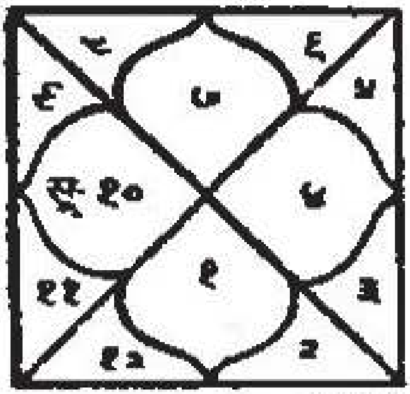

७६३

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक की भूमि, भवन तथा माता का अपूर्ण सुख रहता है तथा आय से पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : सूर्य

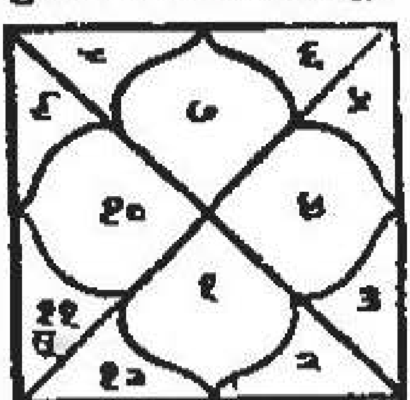

७६४

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से असंतोषपूर्ण लाभ होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों से सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादश भाव को देखने से बुद्धि-योग का तथा कठिन परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ आमदनी का लाभ मिलता है, परन्तु दिमाग में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

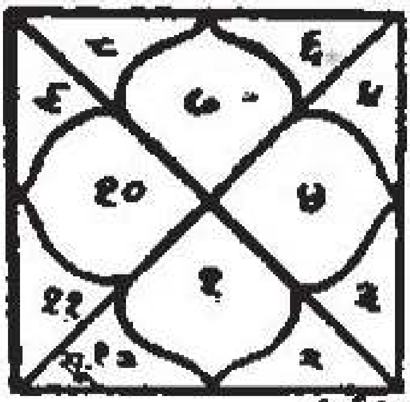

७६४

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा शत्रुओं से लाभ भी होता है। आमदनी भी अच्छी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर तथा हिम्मती होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

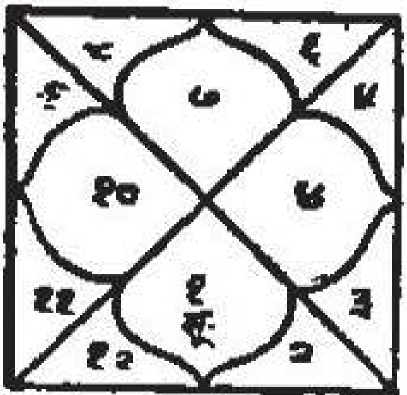

७६५

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी खूब होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा चित्त भी चिन्ताग्रस्त बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

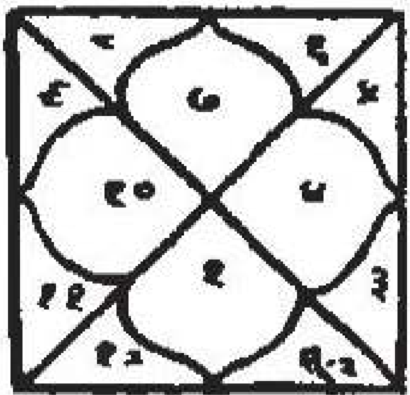

७६६

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित एकादशेश 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम से धनोपार्जन करता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-लाभ में कमी आती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : सूर्य

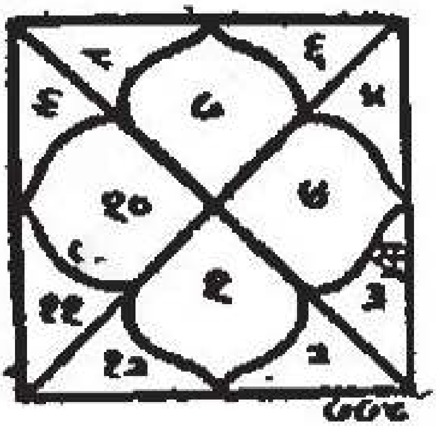

७७८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है। उसे मान तथा सुख पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : सूर्य

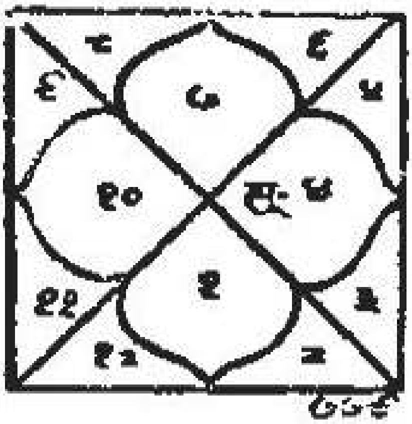

७७९

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय से क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी में खूब वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : सूर्य

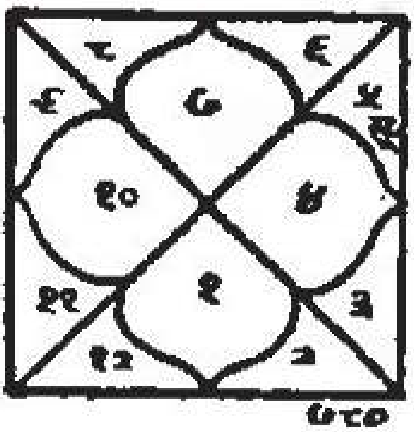

७८०

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत वृद्धि होती रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान के पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्याध्ययन में भी कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में तेजी पाई जाती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

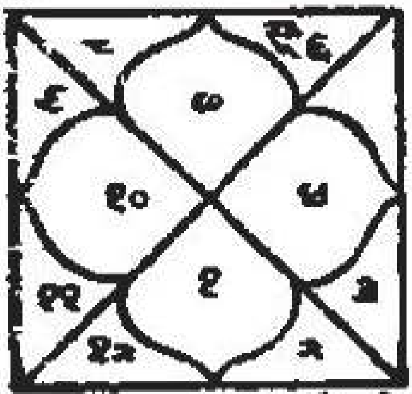

७८१

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से मित्रता स्थापित होती है, झगड़ों से लाभ होता है तथा प्रभाव की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा'

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

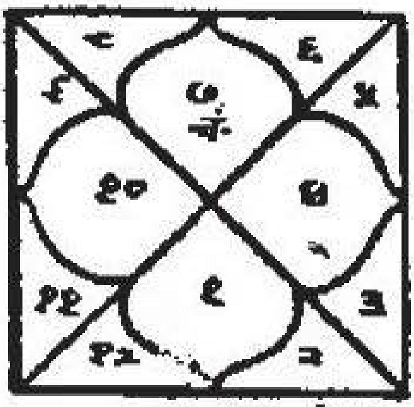

७८२

पहले भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। उसे राजनीति के क्षेत्र में सम्मान मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

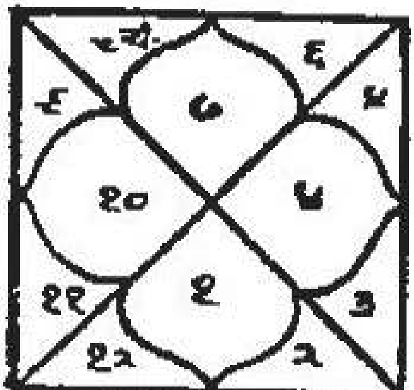

७८३

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा भी लेना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

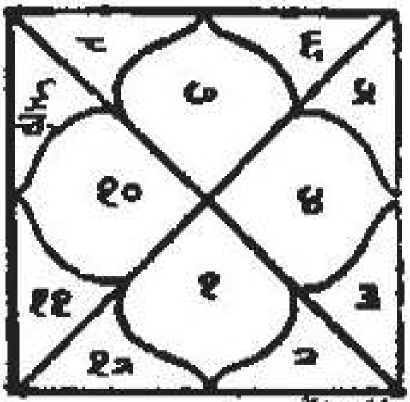

६८४

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय से क्षेत्र में भी सफलता मिलती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

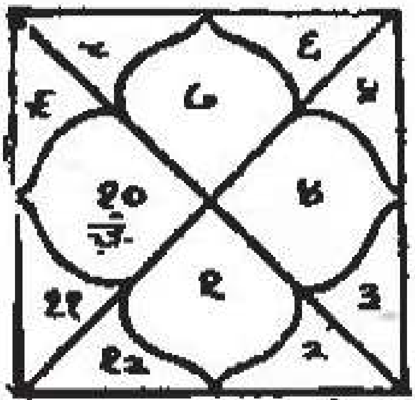

६८५

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

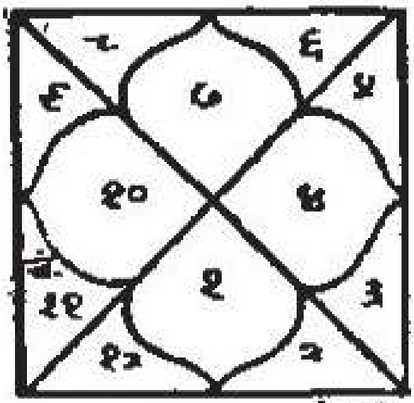

६८६

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। राज्य तथा व्यवसाय से क्षेत्र में भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है तथा जातक धनी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

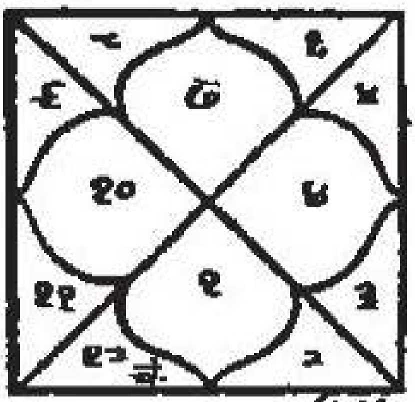

७८७

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को अपनी चतुराई, मनोबल तथा शान्त स्वभाव के कारण शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

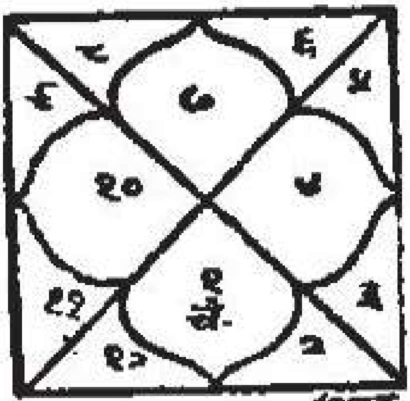

७८८

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को व्यवसाय-पक्ष में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा स्त्री द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से भी यश तथा लाभ मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

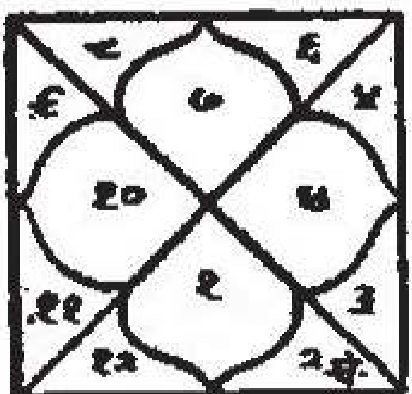

७८९

आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय रहता है, परन्तु पिता-पक्ष से हानि, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्मान तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कमजोर रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : चन्द्र

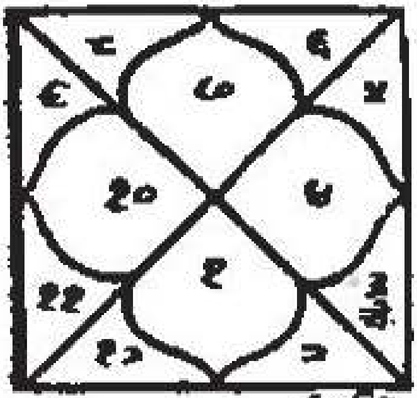

७९०

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी यश, सहयोग तथा सम्मान का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : चन्द्र

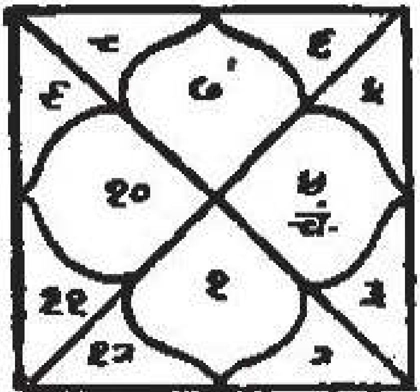

७९१

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति, सहयोग, सम्मान, यश तथा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुलालग्न : एकादशभाव : चन्द्र

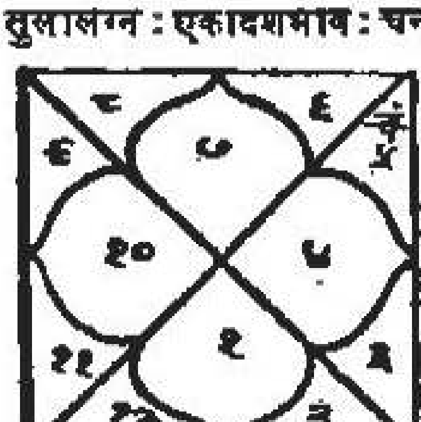

७९२

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरन्तर मिलते रहते हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता, सम्मान तथा यश आदि की यथेष्ट प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान के पक्ष से सामान्य असंतोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति होशियार, चालाक तथा स्वार्थी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

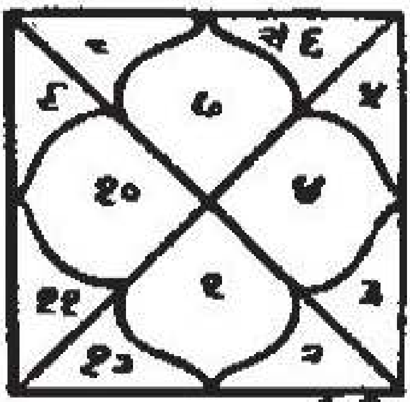

७४३

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं उन्नति भी होती है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। प्रतिष्ठा-मान में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति एवं चातुर्य द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न में मंगल

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : मंगल

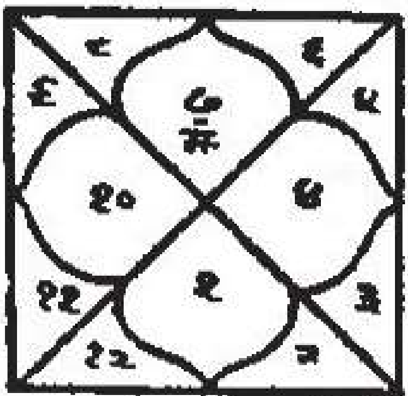

७४४

पहले भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

चौथी उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है, परन्तु उदर-विकार रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित मंगल का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : मंगल

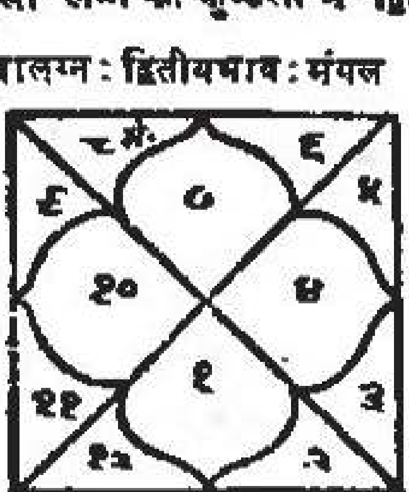

७४५

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। आठवीं मित्रदृष्टि के नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : मंगल

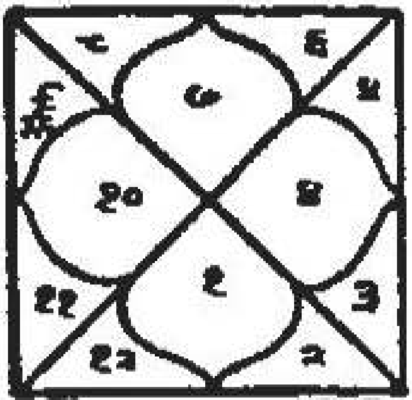

७८६

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। धन-लाभ भी खूब होता है तथा स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुललाग्न : चतुर्थभाव : मंगल

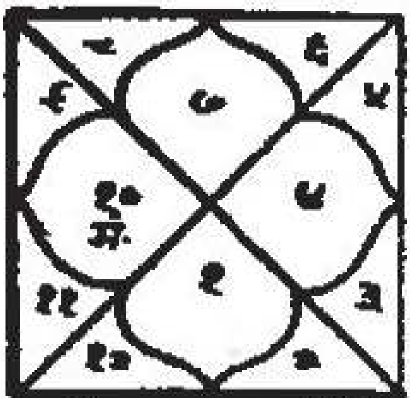

७८७

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से मित्रराशि में दशमभाव को देखने से पिता से सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से क्षेत्र की उन्नति में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब अच्छी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : मंगल

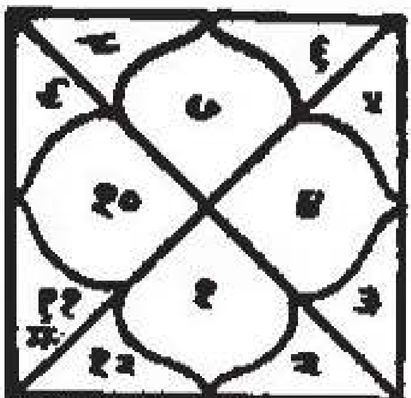

७८८

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कुटुम्ब तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है। बुद्धि-बल से व्यवसाय में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : मंगल

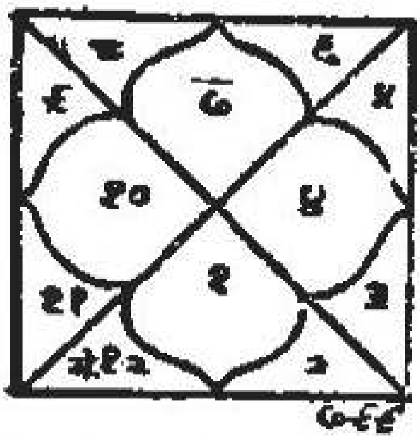

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसे व्यक्ति को झगड़े-मुकद्दमे आदि से लाभ होता रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : मंगल

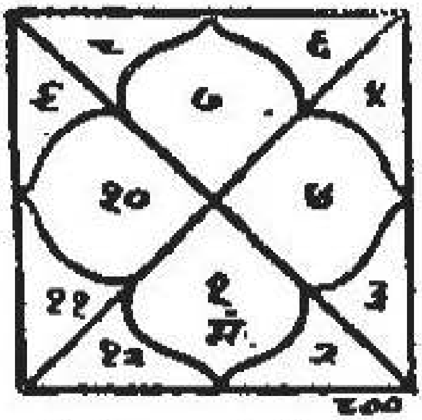

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ बन्धन-सा रहता है, परन्तु भोग की यथेष्ट प्राप्ति होती है। दैनिक व्यवसाय भी अच्छा रहता है। चौथी नीच-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में गर्मी अथवा रक्त-विकार रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : मंगल

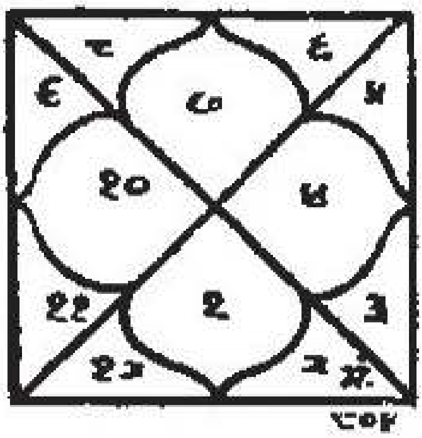

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय के कुछ कष्ट होता है। बाहरी स्थानों के व्यवसाय से तथा पुरातत्त्व से लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : मंगल

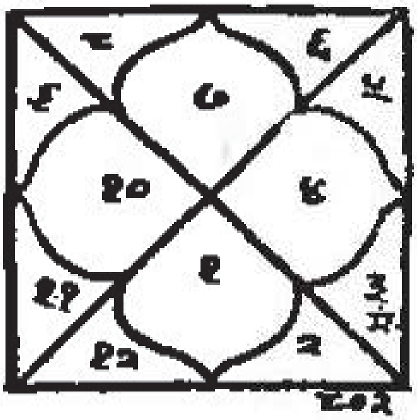

८०२

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। स्त्री भाग्यशालिनी मिलती है, फलतः विवाहोपरान्त विशेष लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। आठवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : मंगल

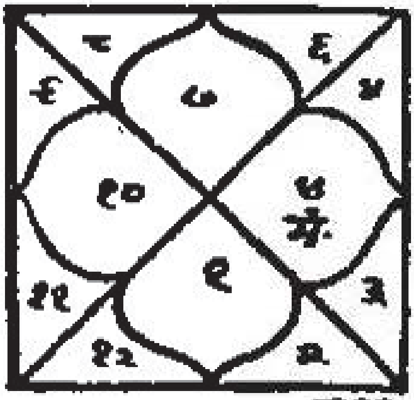

८०३

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा स्त्री एवं कुटुम्ब के सुख में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर दुर्बल रहता है, परन्तु सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा विद्या-बुद्धि में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : मंगल

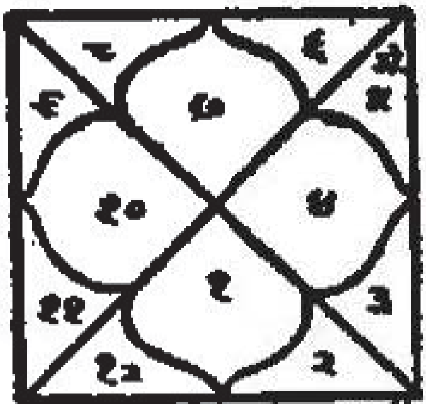

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से धन का पर्याप्त लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से असन्तोष तथा विद्या-बुद्धि में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : मंगल

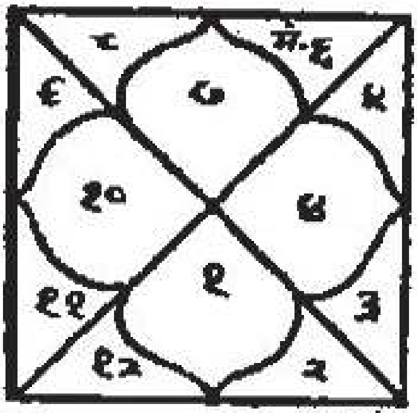

८०५

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में हानि एवं असन्तोष के अवसर उपस्थित होते हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमी रहती है।

'तुला' लग्न में 'बुध'

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : बुध

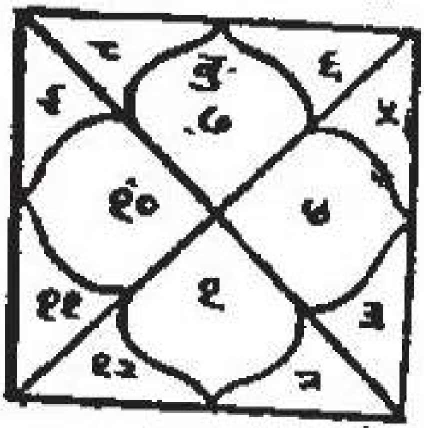

८०६

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता और खूब खर्च करता है। भाग्य में कमी होते हुए भी भाग्यवान् समझा जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : बुध

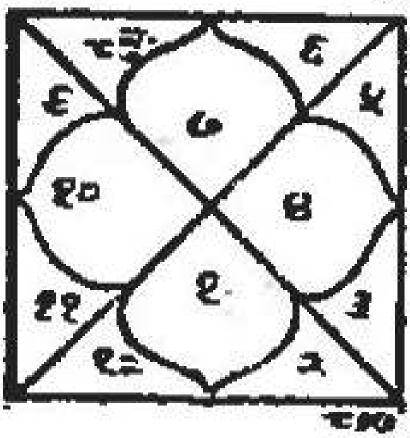

८०७

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। धन खूब खर्च करता है तथा स्वार्थ के लिए ही धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः धनी माना जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : बुध

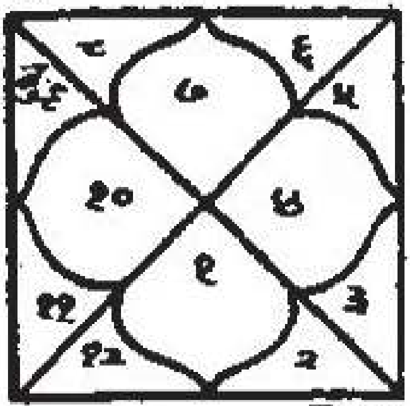

८०८

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है तथा भाग्योन्नति में सामान्य रुकावटें आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : बुध

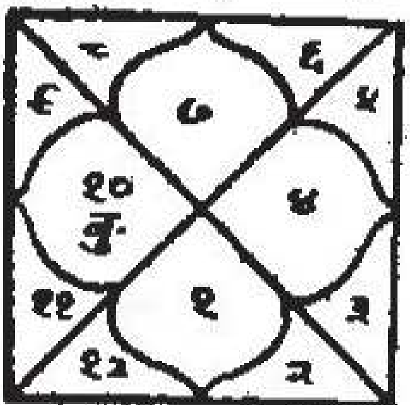

८०९

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। बाहरी संबंधों से यथेष्ट लाभ होता है। वह खर्च भी खूब करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा, यश, मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : बुध

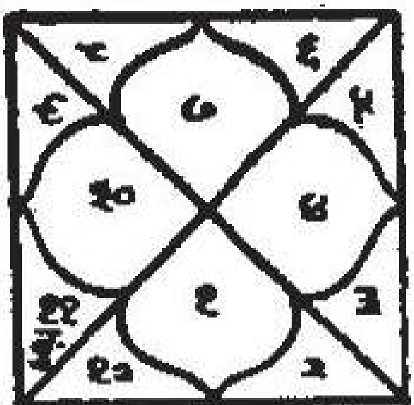

८१०

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ धनी के साथ होता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की वृद्धि होती है। खर्च भी खूब रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी यथेष्ट रहती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला, प्रतिष्ठित तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : बुध

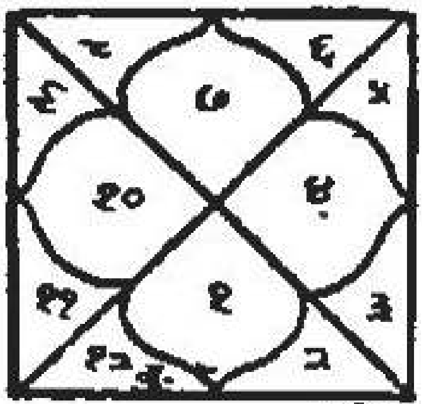

च० २२

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा खर्च भी कठिनाई से चलता है। धर्म एवं भाग्य के क्षेत्र में भी कमज़ोरी रहती है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : बुध

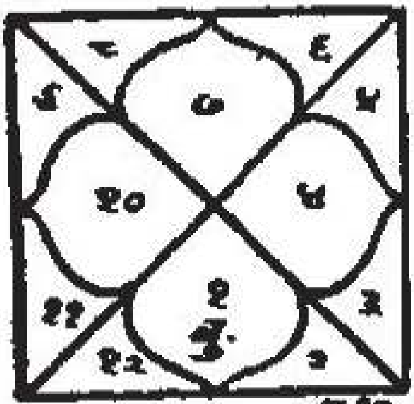

च० २२

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित व्ययेश 'बुध' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गृहस्थी का खर्च अच्छी तरह चलता है तथा धर्म का पालन भी होता है। बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : बुध

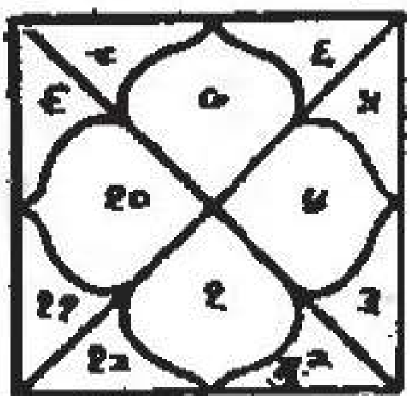

च० २३

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमज़ोरी रहती है। बाहरी संबंधों से कठिनाइयों के साथ लाभ होता है तथा खर्च चलाने में भी परेशानियाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन की वृद्धि होती है, परन्तु यश कम ही मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : बुध

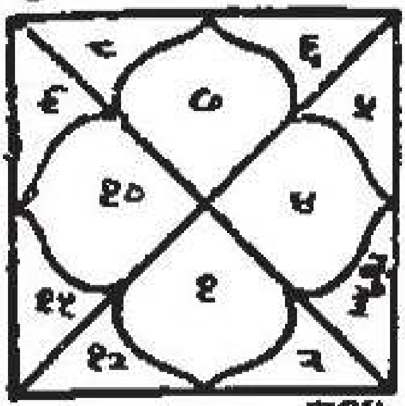

८२४

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : बुध

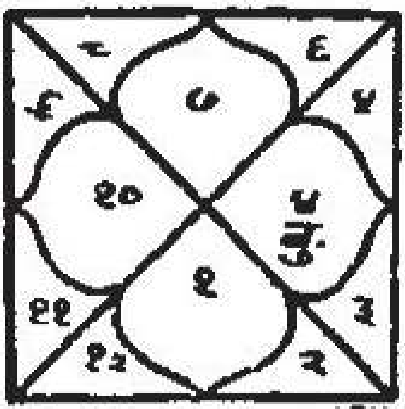

८२५

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी कम ही होता है। भाग्योन्नति भी कम होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है जिसके कारण वह धनी समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : बुध

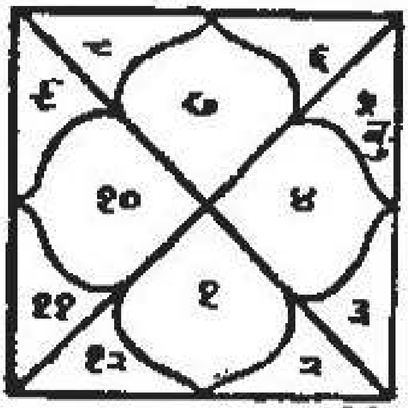

८२६

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी यथेष्ट रहती है। वह धर्मात्मा तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा वाणी के बल पर विशेष उन्नति करता है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : बुध

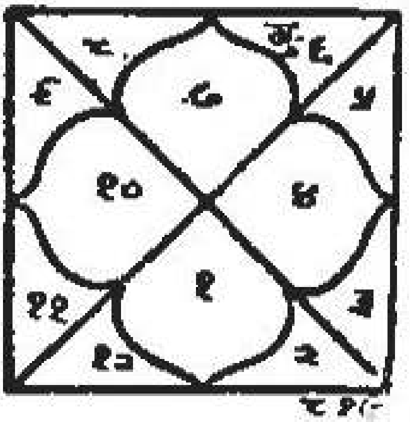

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ भाव तथा सुख की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा कुछ अनुचित उपायों के सहारे शत्रु-पक्ष में काम निकालना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : गुरु

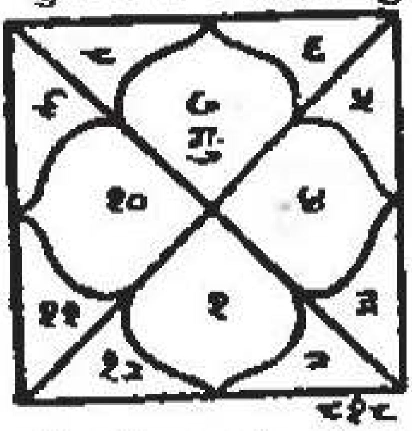

पहले भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव, पुरुषार्थ तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है। शत्रु-पक्ष में हिम्मत के बल पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

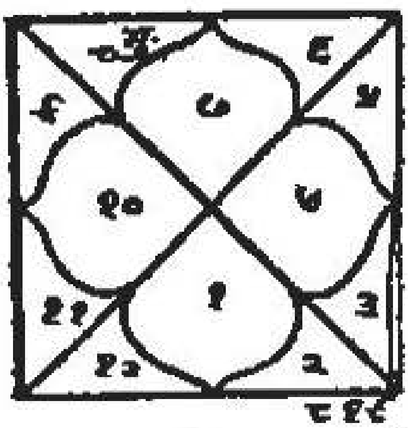

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से जातक अपने धन के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

नवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, शुभ सम्मान तथा लग्न लाभ प्राप्त होते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : गुरु

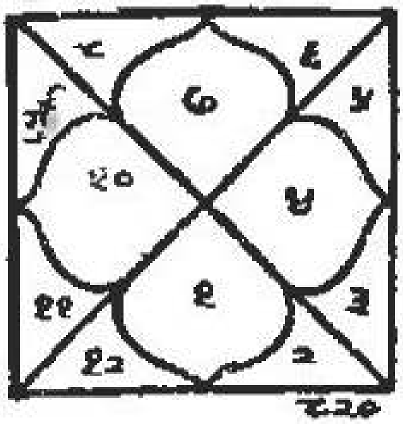

८२०

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में सामान्य कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : गुरु

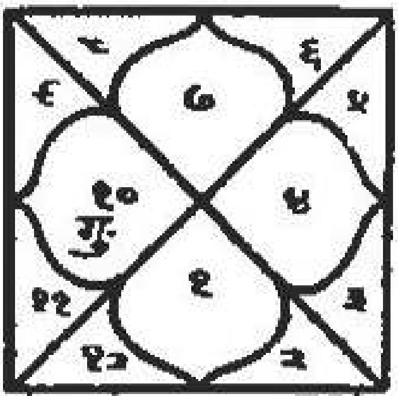

८२१

चौथे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा शत्रु-पक्ष में भी परेशानी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ होता है।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : गुरु

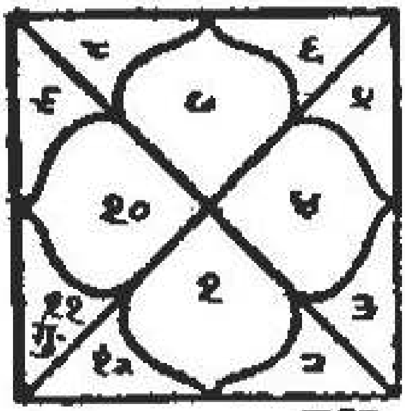

८२२

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद भी रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव तथा बल की प्राप्ति होती है, परन्तु स्वास्थ्य में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : गुरु

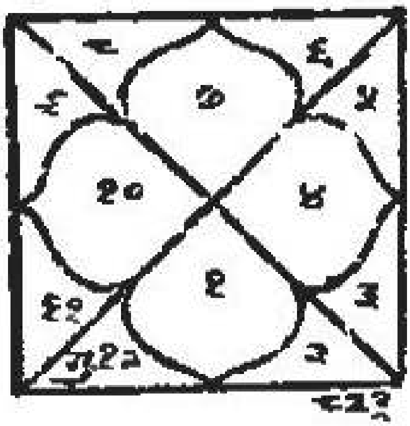

छठे भाव में स्वराशिस्थ 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित करता है। भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ कमी रहती है। पाँचवीं उच्च-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में यथेष्ट सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : गुरु

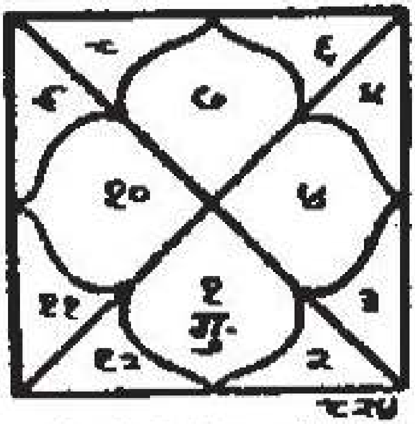

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय की उन्नति करता है तथा स्त्री की शक्ति भी पाता है, परन्तु स्त्री से कुछ मतभेद रहता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : गुरु

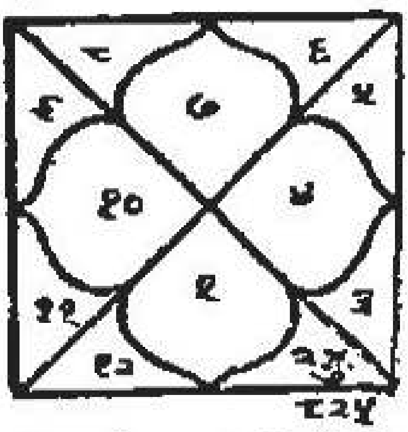

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पुरातत्व एवं आयु की वृद्धि होती है। परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष में भी परेशानी रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। नवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : गुरु

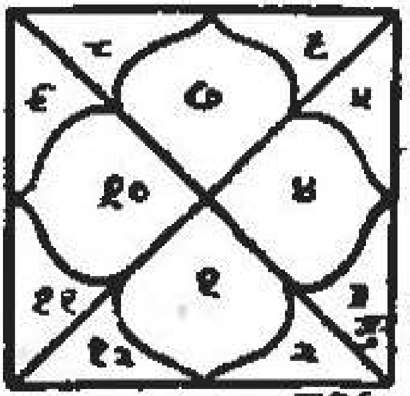

चक्र २६

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है तथा वह यशस्वी भी होता है। शत्रुपक्ष अथवा अन्य झगड़ों के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। पाँचवी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, परन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : गुरु

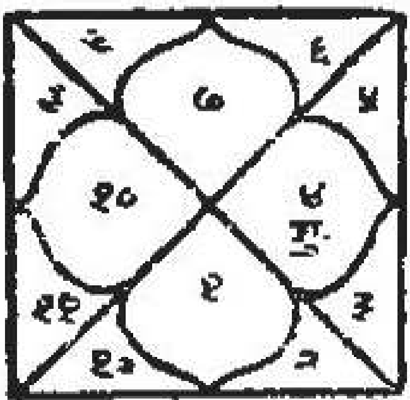

चक्र २७

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। भाई-बहिन का सुख भी मिलता है, परन्तु कुछ मतभेद भी रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है।

नवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : एकादशभाव : गुरु

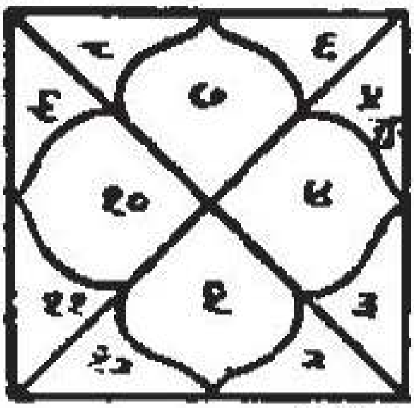

चक्र २८

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी आय तथा ऐश्वर्य को बढ़ाता है। उसे शत्रु-पक्ष में भी लाभ होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को स्वराशि में देखने से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। परन्तु बुद्धि अधिक होती है।

नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : गुरु

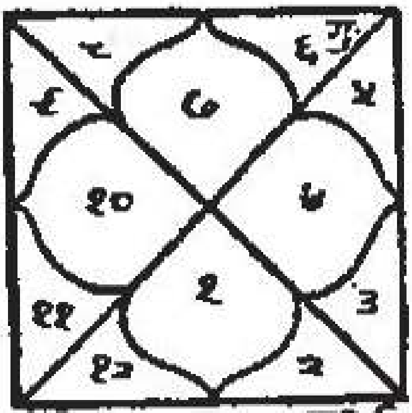

च० ३६

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। पाँचवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से गुप्त युक्तियों द्वारा तथा कुछ दबकर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

'तुला' लग्न में 'शुक्र'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : शुक्र

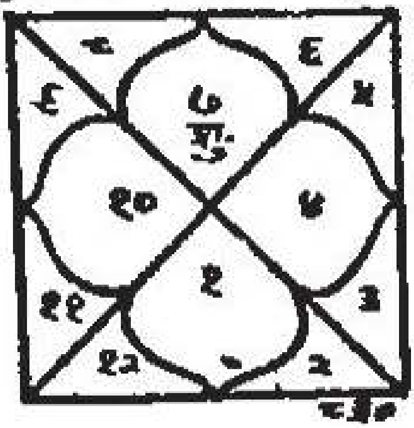

च० ३७

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के शारीरिक तथा आत्मिक बल एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी मिलता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी शरीर में परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

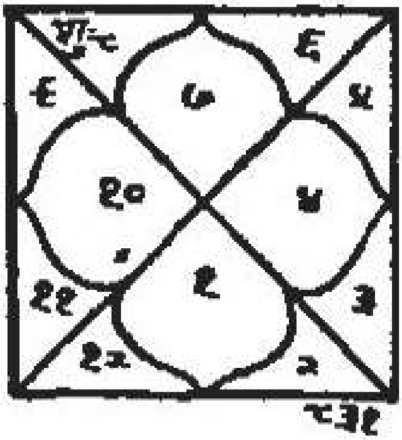

च० ३८

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु उसे कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कभी-कभी उसे कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : शुक्र

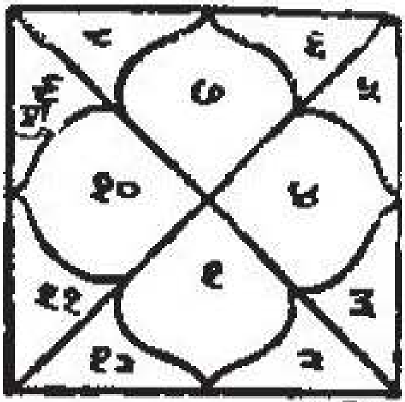

८३२

तीसरे भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली जीवन बिताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

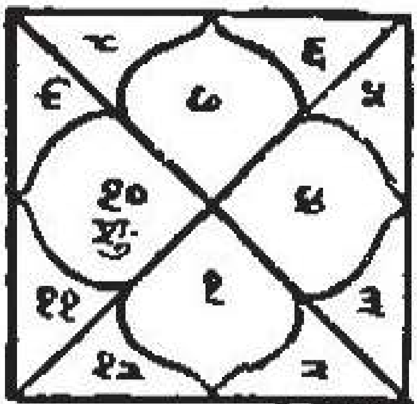

८३३

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को कुछ कमी के साथ माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : शुक्र

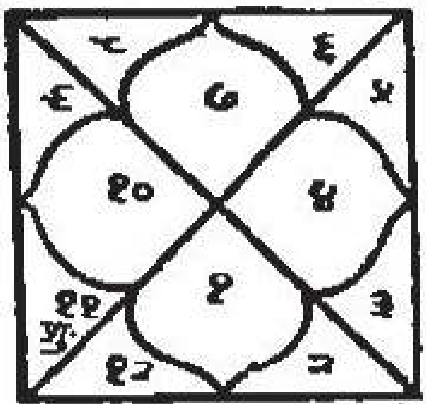

८३४

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान के पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ भी अच्छा रहता है। ऐसा जातक अपने बुद्धि-बल से उन्नति करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

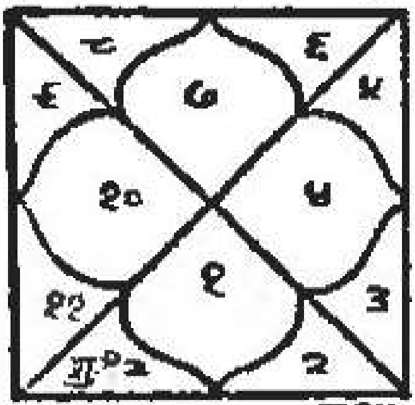

च ३५

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर भी विजय पा लेता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ भी होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के कारण कुछ परेशानी रहती है। ऐसा व्यक्ति ठाठ-बाट का जीवन बिताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : सप्तमभाव : शुक्र

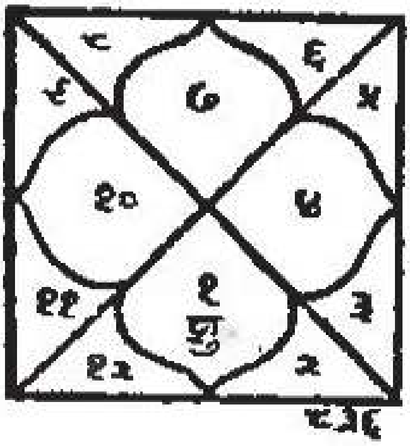

च ३६

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के रहते हुए भी उनसे शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है और आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशिस्थ प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्म-बल एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

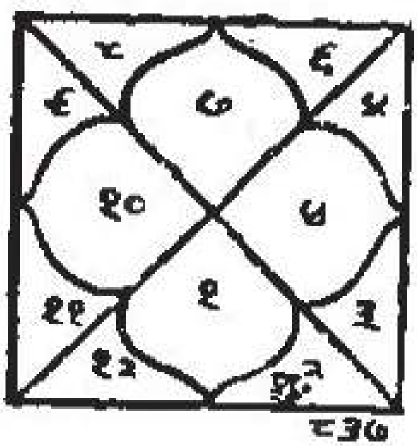

च ३७

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक को धन-संचय के लिए चतुराई का सहारा लेना पड़ता है तथा कुटुम्बियों से उसका कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : शुक्र

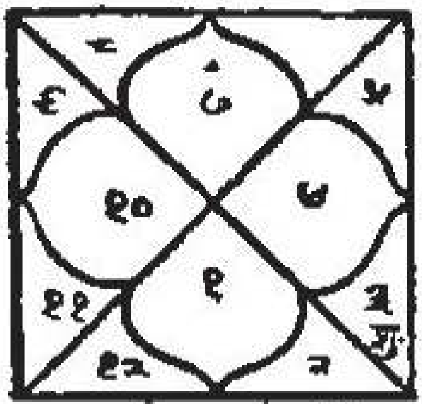

८३८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति कुछ कमी के साथ होती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं शील भी मिलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से सामान्य मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : शुक्र

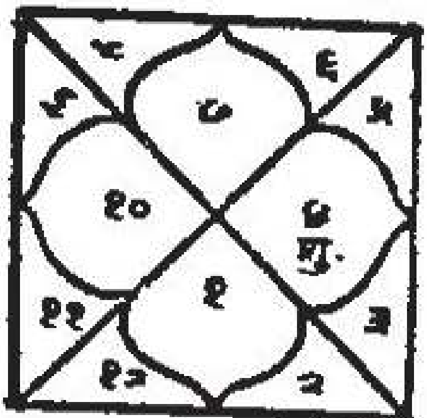

८३९

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सफलता का मूल कारण चातुर्य एवं शारीरिक श्रम होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : शुक्र

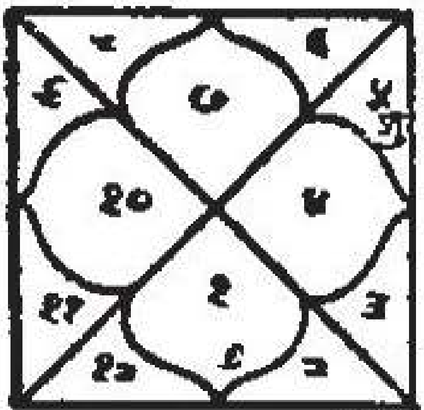

८४०

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम तथा चातुर्य के द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि तथा वाणी की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : शुक्र

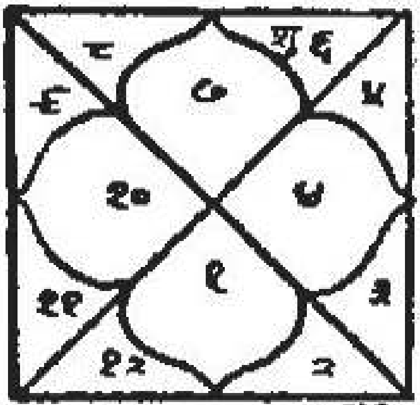

चक्र १

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट होता है। आयु, पुरातत्त्व तथा शारीरिक क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझटों में हिम्मत तथा चतुराई से सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न में 'शनि'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

'तुलालग्न : प्रथमभाव : शनि

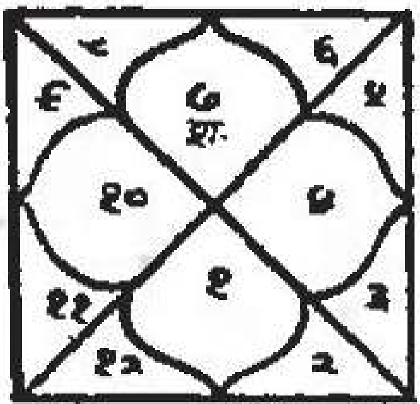

चक्र २

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक स्थूल शरीर का तथा प्रभावशाली होता है। उसे माता, भूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या का सुख भी उत्तम रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तीसरे भाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम भी कठिनाई से ही बढ़ पाता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : शनि

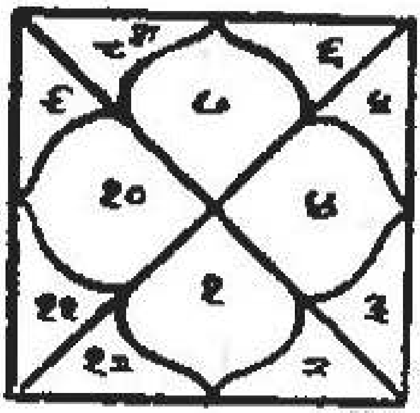

चक्र ३

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्बियों से कुछ मतभेद रहता है। सन्तान के पक्ष में कमी तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में लाभ होता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी अच्छी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : शनि

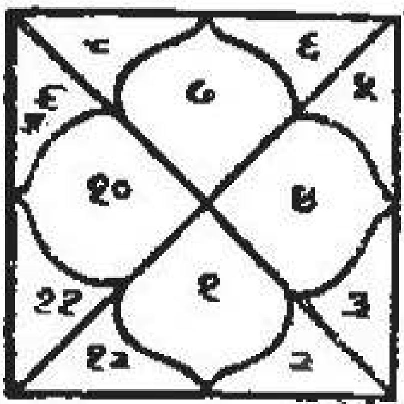

८५४

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ मतभेद रहता है। माता द्वारा भी शक्ति मिलती है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान से कुछ मतभेद भी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : शनि

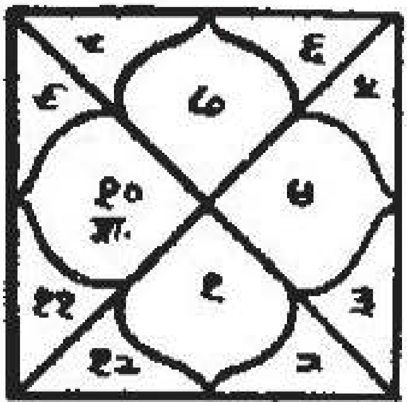

८५५

चौथे भाव में स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

दसवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, यशस्वी, मानी तथा प्रभावशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : शनि

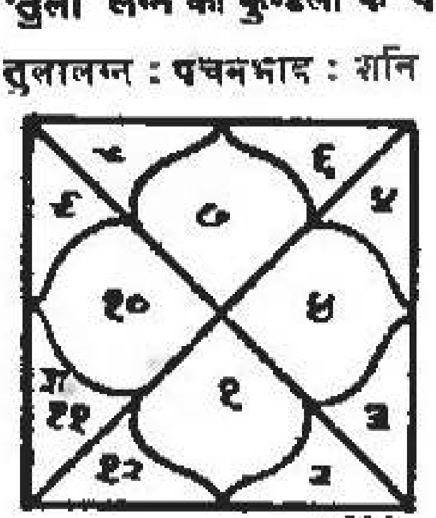

८५६

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में भी कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब से मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : षष्ठभाव : शनि

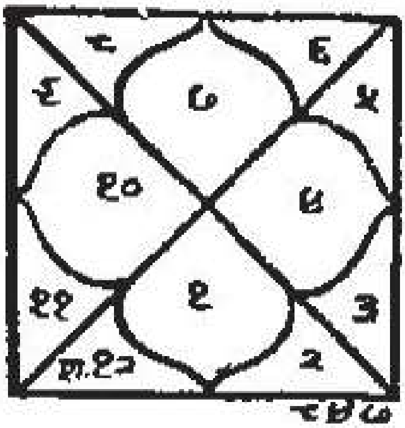

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन के सुख एवं विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता भी कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पुरुषार्थ की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : सप्तमभाव : शनि

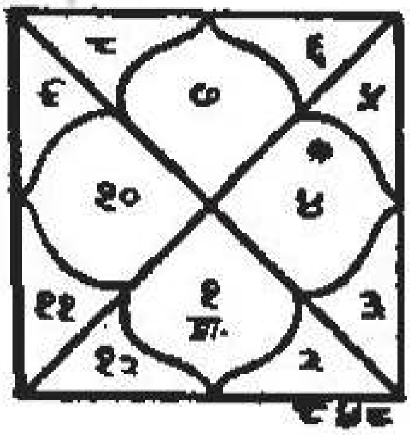

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री, गृहस्थी तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई और अशान्ति का सामना करना पड़ता है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी कमजोर रहता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक के शरीर का कद लम्बा होता है तथा उसे शारीरिक सुख भी मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : अष्टमभाव : शनि

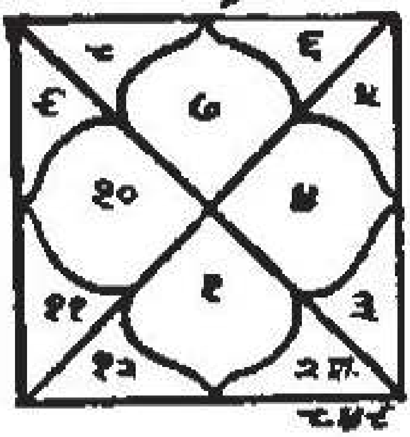

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का अच्छा लाभ होता है। माता, भूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमी आती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में भी व्यवधान पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने विद्या एवं सन्तान का सामान्य लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : शनि

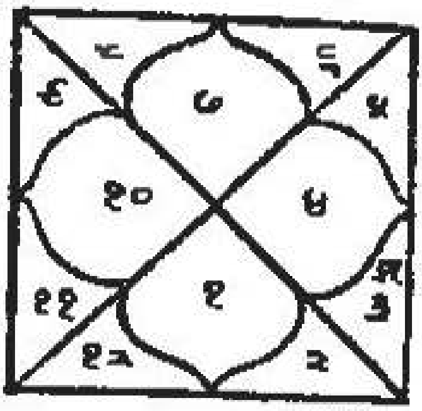

८५०

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। विद्या, सन्तान, भूमि, भवन एवं माता का सुख भी अच्छा मिलता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी से मार्ग में रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : शनि

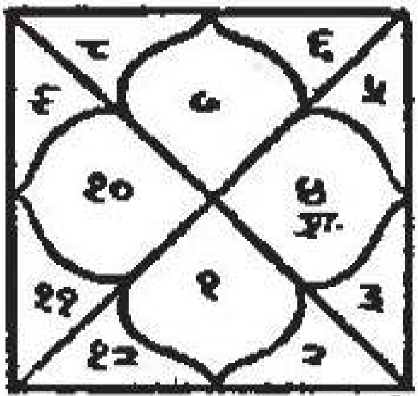

८५१

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह स्वयं विद्वान् होता है, परन्तु सन्तान से मतभेद बना रहता है। तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के चतुर्थभाव में देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। दसवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : शनि

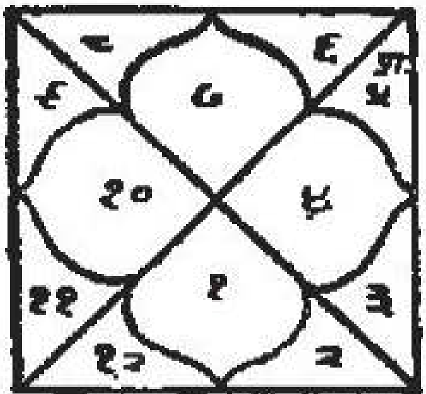

८५२

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी कुछ कठिनाइयों के साथ खूब होती है। माता, भूमि तथा भवन आदि का भी यथेष्ट सुख मिलता है। तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। ऐसा व्यक्ति मनमौजी, लापरवाह तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : शनि

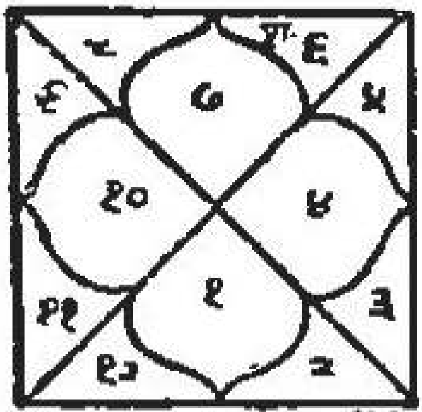

८४३

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी संबंधों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन के संचय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर सामान्य प्रभाव बना रहता है।

दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की बुद्धि तथा वाणी कुछ भ्रम-युक्त भी बनी रहती है।

'तुला' लग्न में 'राहु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : राहु

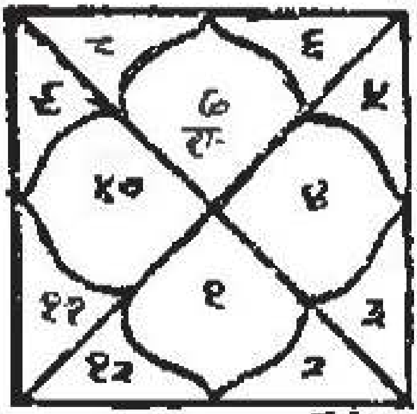

८४४

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह परेशान भी रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए गुप्त चातुर्य का आश्रय लेता है तथा कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अपनी सूझ-बूझ से उन पर विजय भी पा लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : राहु

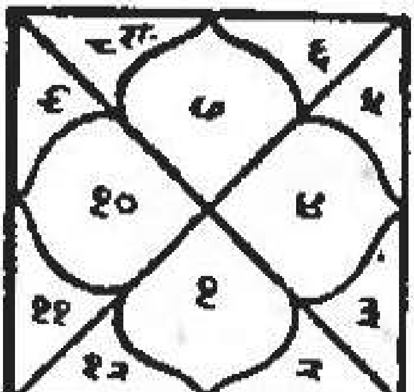

८४५

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन के संग्रह करने में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। कभी आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति होती है तो कभी घोर आर्थिक संकट भी आते हैं। वह गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर किसी प्रकार अपना काम चलाता है। उसे कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : राहु

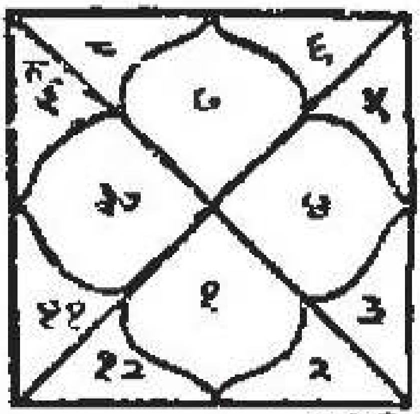

८५६

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है, परन्तु वह युक्तियों का आश्रय लेकर उसमें वृद्धि करता है तथा अनुचित मार्ग भी अपनाता है। उसे भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है तथा जीवन में कभी-कभी अन्य प्रकार के घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। चातुर्य, युक्ति और पुरुषार्थ के बल पर ही वह कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर पाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : राहु

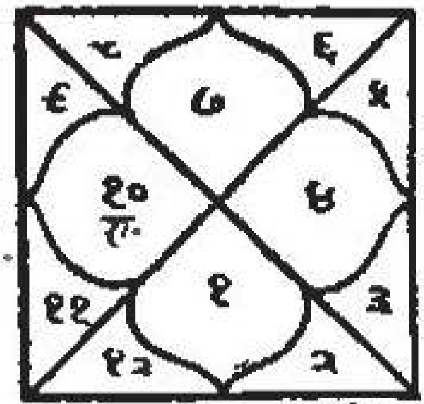

८५७

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु गुप्त युक्तियों, साहस तथा दृढ़ता के बल पर वह संकटों का सामना करके उन पर विजय पा लेता है। उसका जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : राहु

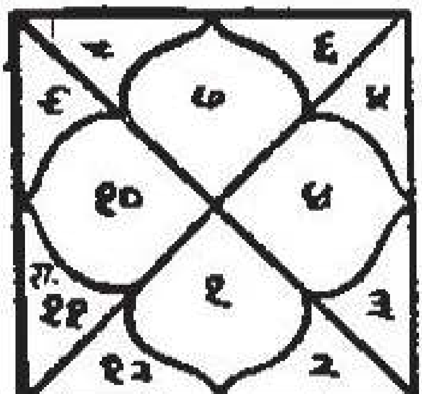

८५८

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। वह सदैव चिन्तित तथा परेशान बना रहता है। स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर ऊपर से बड़ी दृढ़ता प्रदर्शित करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : राहु

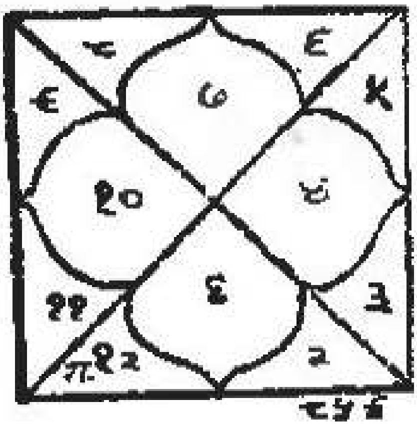

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठाकर भी विजय प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, हिम्मती तथा गुप्त युक्तियों का ज्ञाता होता है। अपना प्रभाव स्थापित करने में उसे सफलता मिल जाती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : राहु

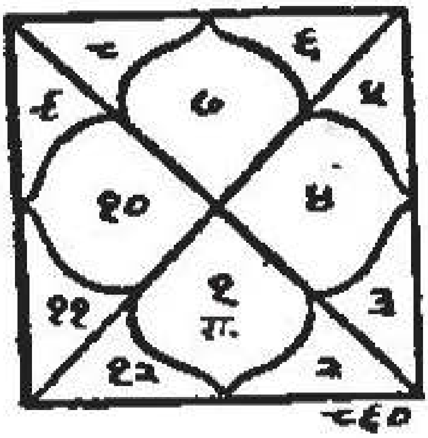

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

व्यवसाय में भी कभी-कभी बड़े संकट आते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य और साहस के बल पर उन सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : अष्टमभाव : राहु

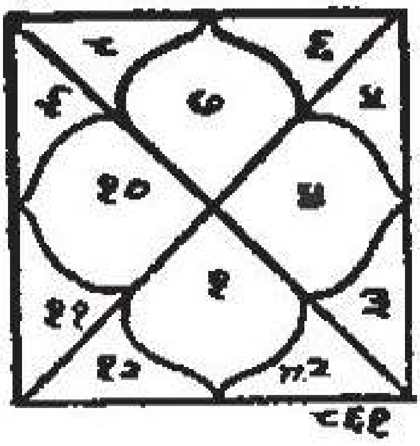

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को आयु पर उसे बड़े संकट आते हैं, परन्तु मृत्यु नहीं होती। पुरातत्त्व की हानि भी होती है। दैनिक जीवन में भी अनेक संघर्ष, चिन्ता। । परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : नवमभाव : राहु

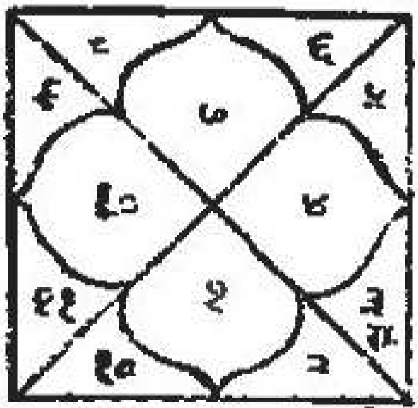

८९२

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की विशेष उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसकी भाग्योन्नति में कभी-कभी बाधाएँ आती हैं, परन्तु वह अपने चातुर्य, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर इन सब पर विजय पा लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : दशमभाव : राहु

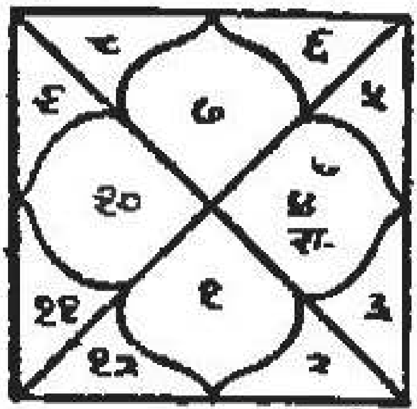

८९३

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है। राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी संकट आते हैं। उन्नति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को पार करने के बाद ही उसे सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : एकादशभाव : राहु

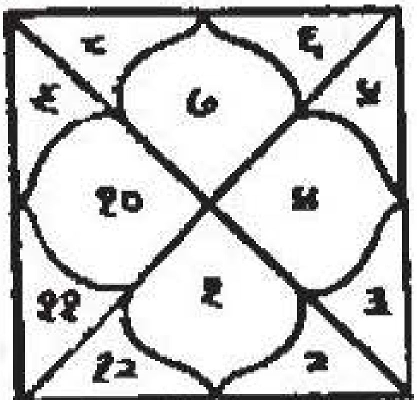

८९४

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं जिन पर वह गुप्त युक्तियों, चतुराई, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : राहु

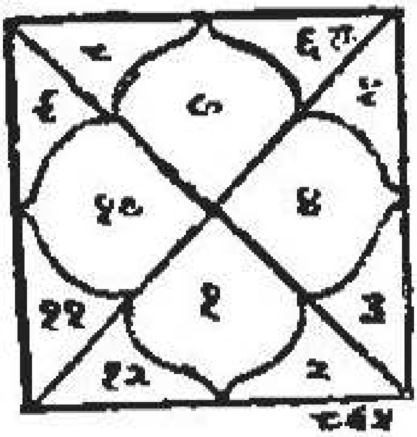

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ लाभ भी मिल जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विवेकी, कूट-नीतिज्ञ, परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'तुला' लग्न में 'केतु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : केतु

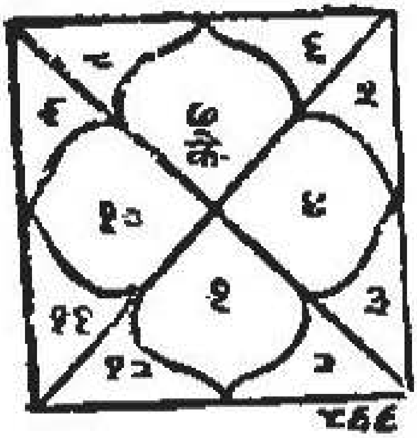

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को कभी-कभी विशेष शारीरिक संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपने गुप्त चातुर्य तथा साहस के बल पर उन पर विजय पाता है और भीतर से गुप्त कमजोरी रहते हुए भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : केतु

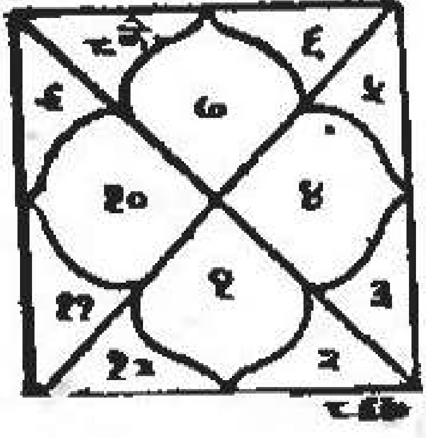

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को धन-प्राप्ति एवं धन-संचय के मार्ग में बड़े संकट आते हैं। वह गुप्त युक्तियों के बल पर ही धनोपार्जन करता है, परन्तु हमेशा चिन्तित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट मिलता है। फिर भी वह बड़ा हिम्मती तथा धैर्य वाला होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : केतु

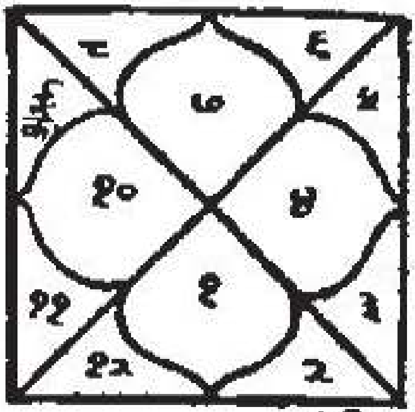

८६८

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी खूब मिलता है। कभी-कभी भाई-बहिनों के कारण उसे कष्ट भी उठाना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : केतु

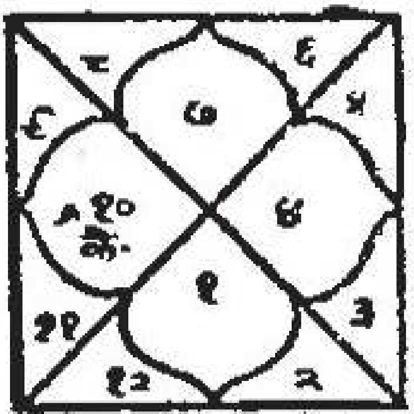

८६९

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। घरेलू झगड़े भी बहुत रहते हैं, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस तथा गुप्त युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है और कुछ सफलता भी पा लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : केतु

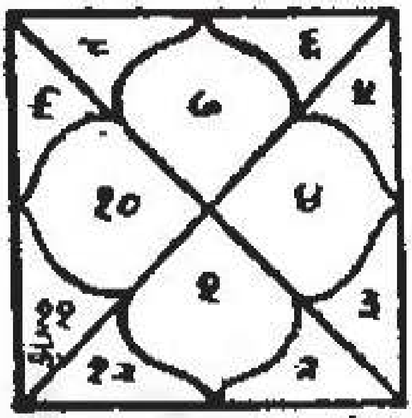

८७०

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित केतु' के प्रभाव से जातक को संतान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अनेक कठिनाइयों के बाद विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता पाता है, फिर भी उसके संकट बने ही रहते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल; लग्न : षष्ठभाव : केतु

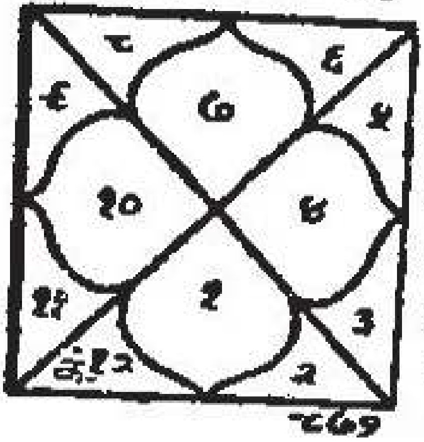

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक झगड़े-झंझट, रोग तथा शत्रुपक्ष में बड़ी हिम्मत, बहादुरी तथा धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है और कभी डरता या घबराता नहीं है। उसे अपने उद्देश्य में सफलता भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति का ननसाल-पक्ष प्रायः कमजोर रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल; लग्न : सप्तमभाव : केतु

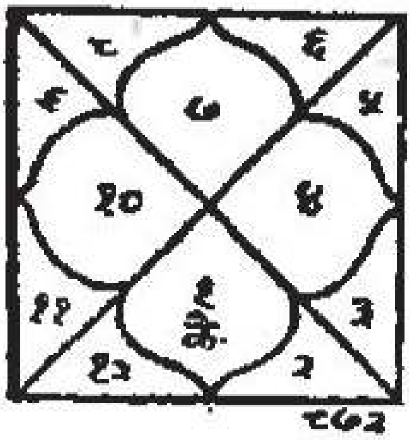

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। वह स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता पाने के लिए धैर्य, हिम्मत, पराक्रम तथा गुप्त युक्तियों का सहारा लेता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल; लग्न : अष्टमभाव : केतु

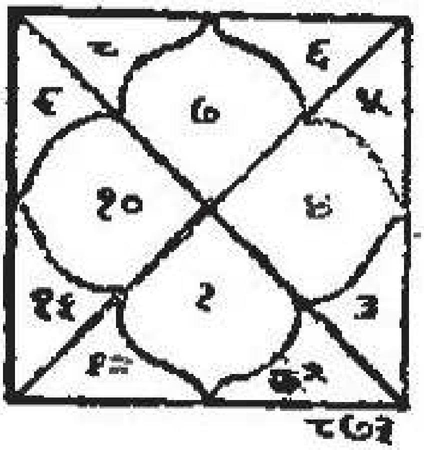

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा उसे पुरातत्व की भी हानि उठानी पड़ती है। पेट में कुछ विकार भी रहता है।

ऐसा व्यक्ति सदैव चिन्तातुर रहता है तथा अपने साहस, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : केतु

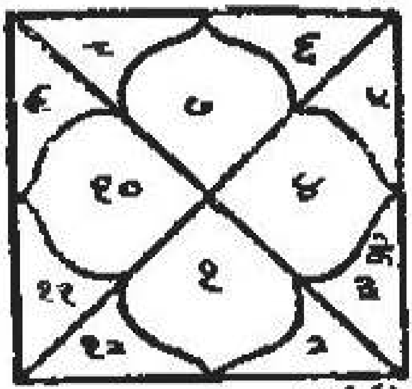

८७४

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक बाधाएँ आती हैं तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

ईश्वर तथा धर्म के विषय में भी उनकी श्रद्धा कम होती है। वह धर्म के विरुद्ध चलने में भी नहीं चूकता तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग कर अपयश भी पाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : केतु

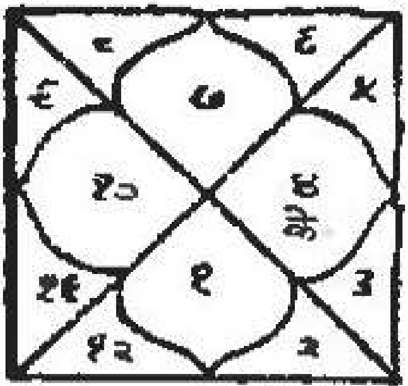

८७५

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा राज्य-पक्ष से भी परेशानी होती है। व्यवसाय में उसे विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उसे अपने जीवन में प्रायः अनेक उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : केतु

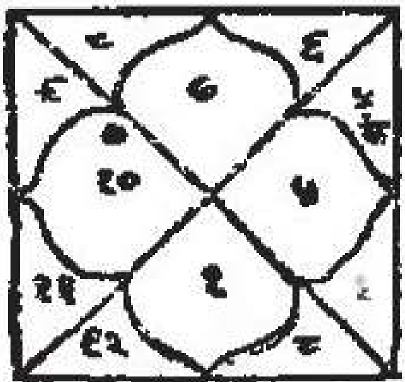

८७६

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु वह अपने धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें दूर करके सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे लाभ के बजाय बहुत घाटा भी उठाना पड़ता है। अनेक संकटों को पार करने के बाद ही उसे सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : केतु

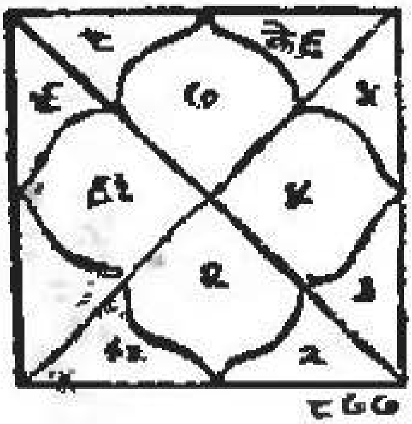

८७७

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना खर्च चलाने के लिए विवेक-बुद्धि से काम लेता तथा कठिन परिश्रम करता है, फिर भी उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है तथा अन्त में सफलता भी प्राप्त हो जाती है।